[Pandey et. al., Vol.5 (Iss.3): March, 2017] ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
ICV (Index Copernicus Value) 2015: 71.21 IF: 4.321 (CosmosImpactFactor), 2.532 (I2OR)
InfoBase Index IBI Factor 3.86

INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH – GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository

Arts

# कठोतिया के शैलचित्रों की विषय वस्तु का कलात्मक विवेचन

**डॉ0 (श्रीमती) अंजलि पाण्डेय्**[*1], **श्रीमती अंजली मिश्रा** [2]
[*1, 2] शास. म. ल. बा. स्रा. कन्या महाविद्यालय, भोपाल

**DOI:** https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v5.i3.2017.1778

आदि मानव ने अपने विचारों एवं अनुभूतियों को सर्वप्रथम कला के द्वारा मूर्त रूप प्रदान किया। अंतस् के भावों एवं कल्पनाओं की चित्रों के माध्यम से व्यंजना कर उसने संभवतः चिर्काल तक अक्षुण्ण रहने वाली अभिनव परम्परा का सूत्रपात किया। पुरा मानव द्वारा आरेखित शैलचित्रों द्वारा तद्युगीन संस्कृति के यथार्थ स्वरूप का ज्ञान तो होता ही है, इसके साथ ही इनसे आदि मानव की सृजनात्मकता, रचनाशीलता व कलात्मक अभिवृत्ति का भी द्योतन होता है।

पुरातत्ववेत्ताओं व मानवशास्त्रियों द्वारा यह प्रमाणित किया जा चुका है कि शैलाश्रय आदि मानव के निवास स्थल थे। अवकाश के क्षणों में उनके द्वारा सृजनात्मक अभिव्यक्ति का कार्य भी इनमें किया जाता रहा है।[1] भारत के अनेक प्रदेशों में पुरा चित्रकार की रचनात्मकता के उदाहरण प्राप्त हुए हैं, किन्तु मध्यप्रदेश में इस पुरातनकला की सर्वाधिक व सर्वोत्कृष्ट सृजनात्मक अभिव्यंजनायें प्राप्त हुई हैं। यहाँ भोपाल के समीप कठोतिया नामक शैलाश्रय समूह स्थल (जिला सीहोर में) है जहाँ अनेक मनोहर शैलचित्र रचनायें परिलक्षित होती है। ये चित्र कृतियां विषय वैविध्य व कलात्मकता के परिप्रेक्ष्य में विशिष्ट व अप्रतिम हैं।

## स्थिति व अन्वेषण –

कठोतिया शैलाश्रय क्षेत्र दक्षिण पश्चिम भोपाल से 30 कि.मी. दूर दक्षिण में (Lat.$23^0$13'50" Long. $77^0$21'30") स्थित है। यहां समीप ही कठोतिया नामक एक वन्य ग्राम है, जिसे राबियाबाद नाम से भी जाना जाता है। इस वन्य ग्राम से कठोतिया शैलाश्रय स्थल की दूरी अनुमानतः 100 मीटर है। यह क्षेत्र सर्वप्रथम 1975 में प्रो. शंकर तिवारी द्वारा अन्वेषित किया गया।[2] श्री तिवारी द्वारा बेतवा उद्गम क्षेत्र में चित्रित शैलाश्रयों की अविच्छिन्न श्रंखला की खोज की गई थी जिसे एस–बेल्ट कहते हैं। प्रो. तिवारी के अनुसार यह विष्व की सबसे लम्बी चित्रित शैलाश्रयों की सतत् श्रृंखला है।[3] इसका उल्लेख रायसेन मध्यप्रदेश जिला गज़ेटियर (पृष्ठ 360 डी) में प्राप्त होता है।[4] कठोतिया शैलाश्रय समूह विन्ध्याचल पर्वत श्रेणी में स्थित एस–बेल्ट (मानचित्र) के अंतर्गत ही आता है।

## विषय वस्तु का कलात्मक विवेचन –

कठोतिया क्षेत्र के शैलाश्रयों में विविध विषयों का चित्रांकन प्राप्त होता है, जिनमें पुरा मानव की विचारशीलता, कल्पनाशक्ति एवं रचनात्मक कुशलता प्रतिबिम्बित् होती है। यहाँ अंकित चित्रों को विषय वस्तु की विविधता के आधार पर निम्नवत् विभाजित कर सकते हैं –

ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
IF: 4.321 (CosmosImpactFactor), 2.532 (I2OR)
InfoBase Index IBI Factor 3.86

- आखेट–दृश्य
- पशु–चित्रण
- पक्षी का अंकन
- सर्पांकन
- मानवाकृतियां (विभिन्न किया कलापों में संलग्न)

## आखेट दृश्य

प्रारम्भिक चित्रकार आखेटक मानव माना गया है एवं आखेट दृश्य के चित्र शैलचित्रकला में सर्वाधिक प्राचीन निर्धारित किये गये हैं। ये चित्र पुरा मानव के अपने अस्तित्व की रक्षा के लिये किये गये संघर्ष के साथ ही, उसकी वीरता व विषम परिस्थितियों पर प्राप्त विजय को भी अभिव्यक्त करते हैं।[5] कठोतिया में आखेट–दृश्यों के अनेक चित्रण प्राप्त हुए हैं। यहां चित्रित रचनाओं में शेर, सुअर, हिरन व बैल इत्यादि वन्य पशुओं का आखेट दर्शित होता है। चित्र कमांक–1–अ शेर के शिकार का दृश्यांकन है, जिसमें पशु के आगे व पीछे दो–दो धनुर्धारी आखेटक मानवाकृतियां रेखांकित हैं। एक मानवाकृति नीचे की ओर चित्रित है, जिसका अंकन आखेट–दृश्य से अलग प्रतीत होता है। शेर का चित्रण रेखा शैली में किया गया है। बस मुख व कान पूरक शैली से बने हैं। शरीर भाग को भी रेखाओं से पूरित किया गया है। संभवतः चित्रकार द्वारा शेर के शरीर की रेखीय रचना को दर्शाने का प्रयास किया गया है। शेर के मुख के पास रक्त की बूंदें भी लक्षित होती हैं। अग्रांकित धनुर्धारियों की मुद्रायें अत्यंत स्वाभाविक हैं, चित्र में पशु की घायल अवस्था व आखेटकों के शौर्य व साहस की स्पष्ट अभिव्यंजना हो रही है। यहां एक अन्य शैलाश्रय में जंगली सूअर के आखेट का चित्रांकन है (चित्र कमांक–1–ब) जिसमें आखेटक मानवाकृतियां भाले से सूअर पर प्रहार कर रही हैं। पशु का चित्रण अर्द्धपूरक शैली में किया गया है। उदर–भाग में कोणीय रेखाओं से पूरण किया गया है, शेष शरीर में रंग भरा गया है। पशु का खुला मुख उसकी पीड़ा व कंदन को व्यंजित कर रहा है। समीप ही एक अन्य पशु भी अंकित है। पशु व आखेटक दोनों के पैरों की रचना से गति का आभास होता है।

दोनों ही चित्रों में चित्रकार की निरीक्षण शक्ति, रूप–ज्ञान व रचनात्मक कुशलता दृष्टव्य हो रही है। आखेट की स्थिति का यथार्थ एवं सजीव चित्रण, चित्र की विशेष कलात्मकता है। दोनों चित्र लाल रंग से बने हैं एवं विद्वानों के अनुसार मध्याश्म कालीन हैं।[6] इस शैलाश्रय समूह स्थल में 4–6 आखेटकों द्वारा समूह में आखेट किये जाने के दृश्यों के रेखांकन के साथ ही कुछ शैलाश्रयों में एक आखेटक द्वारा अकेले ही शिकार किये जाने का चित्रांकन (चित्र कमांक–1–स) भी प्राप्त होता है जैसा कि विभिन्न चित्रों में दृष्टव्य है।

## पशु – चित्रण

कठोतिया क्षेत्र में पशुओं का आखेट–दृश्यों में तो अंकन दर्शित होता ही है, इसके अतिरिक्त यहां विविध अन्य रूपों में भी पशु चित्रण लक्षित होता है। गाय, वृषभ, हिरन, बारहसिंगा इत्यादि पशु यहां स्वतंत्र व समूह रूप में भी चित्रित किये गये हैं। अश्व का चित्रांकन अकेले व आरोहियों के साथ युग्मित स्वरूप (चित्र कमांक–2–अ) में प्राप्त होता है। पशु चित्रांकन में उनके यथार्थ रूप साम्य को दर्शाने के साथ ही पुरा चित्रकार ने पशुओं की विशेषताओं व गुणों की व्यंजना भी सफलतापूर्वक कर अपनी रचनाकौशल का परिचय दिया है। इन चित्रण में पशुओं की शक्ति, गति व फुर्ति स्पष्टतः परिलक्षित होती है।

विद्वानों के अनुसार शैलचित्रकला के अंतर्गत पशुओं के चित्र सर्वाधिक प्राप्त होते हैं। प्रारम्भिक युग में पुरा मानव द्वारा पशुओं का चित्रण अधिक किया जाना संभवतः उनके अन्तर्मन में जानवरों के प्रति भय, कौतुहल, उनसे अनिष्ट की आशंका या उन पर स्वामित्व पाने की लालसा के वशीभूत होकर किया जाना हो सकता

है, जबकि परवर्ती काल में पषुओं के निरन्तर सानिध्य व दैनिक जीवन में उनसे प्राप्त होने वाले सहयोग से उनके प्रति उत्पन्न स्नेहभाव भी पशु चित्रांकन के लिये प्रेरक बना होगा।

कठोतिया से प्राप्त एक चित्र में (चित्र क्रमांक–2–ब) पशु का समूहबद्ध रूप में अंकन किया गया है। लाल एवं श्वेत वर्ण से किया गया ये अत्यंत मनोहर चित्रांकन है। ऐसा प्रतीत होता है मानो पशु साथ–साथ पंक्तिबद्ध विचरण कर रहे हैं। दृश्य में सबसे ऊपर पूरक शैली में गाय सदृश्य एक बड़ा पशु अंकित है। नीचे पंक्ति के रूप में संयोजित अन्य पशु संभवतः हिरन व बारहसिंगा है, जिनमें से कुछ पूरक शैली व अन्य अलंकृत शैली में निर्मित किये गये हैं। रूप–संयोजन व शैली भेद से चित्र अत्यंत कलात्मक प्रतीत होता है। पुरा मानव की सृजनात्मकता का यह चित्र उत्कृष्ट उदाहरण है। विद्वानों ने इस चित्र को इतिहासकालीन माना है।

चित्र क्रमांक–2–स में एक विचित्र पशु का अंकन है, जो उभरे हुए स्कन्ध से तो वृषभ सदृश्य प्रतीत होता है, किन्तु उसके सींग बारहसिंगा के समान आरेखित किये गये हैं। चित्र पूरक शैली में गेरूए रंग से निर्मित है। पूंछ में केश दर्शाने हेतु प्रयुक्त छोटी रेखायें एवं श्रृंग में विस्तार प्रदर्शित करने हेतु प्रयोग की गई रेखाओं से संगति का प्रभाव उत्पन्न हो रहा है। चित्रकार द्वारा विचित्र पषु की कल्पना कर उसको कलात्मकता से रूपायित किया गया है। विद्वानों के अनुसार यह ताम्राश्मकालीन चित्रण है।

कठोतिया क्षेत्र में ही एक सगर्भ पशु (चित्र क्रमांक–2–द) का चित्रण भी प्राप्त हुआ है। गेरूए रंग से अंकित यह पशु संभवतः गाय है। पशु के शरीर के लगभग मध्य भाग में लंबवत् रेखा से गर्भ स्थान को पृथक किया गया है। गर्भ में बच्चे का रूपांकन प्रकृत से विपरीत स्थिति में किया गया दर्शित हो रहा है, उसका मुख गाय के सदृश्य एक ही दिशा में चित्रित किया गया है। संभवतः पुरा चित्रकार रूप–साम्य व भावाभिव्यंजना के प्रति अधिक सचेत था, अतः उसके द्वारा बच्चे की गर्भ में वास्तविक अवस्था के ज्ञान को चित्राकंन करते समय अनदेखा कर दिया गया। गेरूए रंग से रेखीयविधि से निर्मित इस चित्र में सींग पूरक शैली में बने हैं जो अत्यंत सुदृढ़ लक्षित होते हैं। मुख, ग्रीवा व पैरों में बारीक रेखाओं से पूरण किया गया है। पशु के गर्भिणी स्वरूप का अंकन आदि मानव की बौद्धिकता व अंर्तज्ञान का प्रतीक है। इसके साथ ही जन्म से जुड़ी स्वाभाविक जिज्ञासु प्रवृत्ति भी इस प्रकार के चित्रण के मूल में निहित हो सकती है। गर्भ में बच्चे को दर्शा कर पुरा चित्रकार ने जीवन के सृजन को बिम्बित किया है। मातृत्व भाव की अभिव्यंजना इस चित्र की विशेषता व कलात्मकता है। विद्वानों के मतानुसार यह मध्याश्मकालीन चित्र रचना है।

**पक्षी–अंकन –**

शैल चित्रकला के क्षेत्र में पक्षियों के चित्रांकन, पशुओं के चित्रण की अपेक्षाकृत कम प्राप्त होते हैं। कठोतिया के एक शैलाश्रय में गेरूए रंग से सारस पक्षी का विशाल एवं आकर्षक अंकन (चित्र क्रमांक–3) प्राप्त हुआ है। इस चित्र में एक बड़ा सारस पक्षी अपने बच्चों को आहार देता प्रतीत होता है उसकी लम्बी ग्रीवा सामने नीचे की ओर झुकी हुई है। विद्वानों द्वारा इस पक्षी की माप चोंच से पंजे तक 7 फीट ज्ञात की गई है व यह पक्षी का विशालतम शैल चित्रांकन माना गया है।[7] चित्रण अर्द्धपूरक व अलंकृत शैली में किया गया है। इस रचना में पक्षी के यथार्थ रूप–सादृश्य के साथ ही अलंकरण के रूप में कल्पना का समावेश भी दृष्टव्य होता है। विशाल अंकन के लिये अत्यंत कुशलता व परिश्रम की आवश्यकता होती है, जो इस चित्र में स्पष्टतः परिलक्षित है। उत्कृष्ट रूप–संयोजन व भावाभिव्यंजना इस चित्र की विशेषता है। पुरा मानव के हृदय में बसे वात्सल्य भाव को रूपायित करता यह चित्रांकन उसकी रचना प्रतिभा का अद्वितीय दृष्टांत है। विद्वानों के अनुसार यह आरेखन मध्याष्मकालीन है।

ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
IF: 4.321 (CosmosImpactFactor), 2.532 (I2OR)
InfoBase Index IBI Factor 3.86

**सर्पांकन –**

सर्पाकृति का स्पष्ट चित्रण शैल चित्रकला के क्षेत्र में संभवतः कहीं पर भी प्राप्त नहीं हुआ है। कठोतिया शैलाश्रय क्षेत्र में लाल व सफेद रंग से एवं अलंकृत शैली में सर्प (पायथन) का विलक्षण चित्रांकन (चित्र कमांक–4) प्राप्त हुआ है। यह चित्र अनुमानतः 6 फीट से लंबा है। द्विवर्णीय रंग–योजना में चित्रित इस सर्पाकृति के आस पास ब्राह्मी लिपि के अक्षर भी अंकित हैं। साथ ही नागरी लिपि में पदम नाम भी लिखा है। सर्प की आकृति को आयताकार खानों में विभाजित कर किन्हीं खानों को रंग से भरा गया है व किन्हीं आयत में तरंग समान रेखा से अलंकरण दृष्टव्य है। मुख भाग में लाल रंग से पूरण है। रूपांकन अत्यंत अद्भुत व कलात्मक है। सुंदर रंग योजना के साथ आकर्षक अलंकरण से युक्त यह चित्र पुरा मानव की कला अभिरूचि व सृजनात्मकता का द्योतक है। अभी तक की गई खोजों के आधार पर विद्वानों का मत है कि इतने दीर्घस्वरूप व अलंकृत सर्प का चित्रण संभवतः विश्व में अन्यत्र प्राप्त नहीं हुआ है।

**मानवाकृतियाँ (विभिन्न कियाकलापों में संलग्न) –**

शैलचित्रों में न केवल पशु–पक्षी व अन्य जीवों का रेखाँकन प्राप्त होता है, अपितु पुरा मानव द्वारा स्वयं को भी इन चित्रों में रूचिपूर्वक रूपायित किया गया है। कठोतिया के शैलाश्रयों में मानव को विविध प्रकार के कियाकलापों में रत् दर्शाया गया है। आखेट किया करते हुए तो मानव को आरेखित किया ही गया है, इसके अतिरिक्त नृत्य करते हुए, धार्मिक कार्य विधियाँ करते हुए, (चित्र कमांक–5) भार ढोते हुए (चित्र कमांक–6) तथा युद्ध दृश्य एवं मैथुन दृश्यों (चित्र कमांक–7) में भी मानव को यहां रूपांकित किया गया है। यहां एक शैलाश्रय में नर्तन करते नग्न मानव समूह का चित्रांकन भी प्राप्त हुआ है।

पुरूषाकृतियों के साथ ही स्त्री मानव आकृतियाँ भी यह यहाँ पर चित्रित की गई हैं। इनका चित्रण खाद्य संग्रहण करते, कूटते–पीसते, बच्चे को स्तनपान कराते व मैथुन दृश्यों में पुरूषों के साथ किया गया है।

चित्र कमांक–8 में नृत्य रत् मानव समूह का अत्यन्त मनभावन चित्रण किया गया है। चित्र लाल व श्वेत वर्ण से रेखायित है। मानवाकृतियां ज्यामितिक आकारों व अलंकृत शैली में रूपांकित की गई हैं। बायीं ओर प्रदर्शित तीन मानवाकृतियां अत्यंत आकर्षक शिरोभूषा सहित चित्रित हैं। त्रिकोण व वर्ग के समान ज्यामितिक आकारों से निर्मित मानवाकृतियों को चित्र में बहुत ही सुंदरता के साथ उत्तम संयोजन किया गया है। नीचे दर्शित मानव समूहों के हाथों का रेखांकन संयुक्त रूप से इस प्रकार किया गया है कि वे सभी एक दूसरे का हाथ पकड़ कर नृत्य करते आभासित हो रहे हैं। कुछ आकृतियों के एक पैर का रेखांकन नहीं किया गया है, संभवतः एक पैर मोड़ कर नृत्य करने की मुद्रा को दर्शाने हेतु ऐसा अंकन किया गया है। चित्र में संतुलित रूप – संयोजन व संगतिपूर्ण आलंकारिकता के साथ ही लयात्मकता भी दृष्टव्य हो रही है। नृत्य मुद्राओं में मानवाकृतियों का इतनी कलात्मकता के साथ आरेखन पुरा रचनाकार की चित्रण–निपुणता का परिचय देती है। विद्वानों द्वारा यह चित्रकृति मध्याश्म कालीन मानी गई है।

चित्र कमांक–9 गायन व नृत्य करते हुए नग्न मानवाकृतियों का दृश्यांकन है। गेरूए रंग से आरेखित इस चित्र रचना में मध्य–भाग में अंकित एक बड़ी सी मानवाकृति संभवतः कोई वाद्य बजा रही है, जिसकी लय पर अन्य आकृतियां सह नृत्य करती प्रतीत हो रही हैं। दायीं ओर विभिन्न कियाओं में संलग्न सूक्ष्म मानव रूप रेखायित हैं। कुछ मानव स्वरूप एक दूसरे के कन्धे पर बैठ कर नृत्य करते दर्शाये गये हैं। एक नग्न मानवाकृति लेटी हुई अवस्था में चित्रांकित है। मानवाकृतियों का अंकन रेखीय विधि से व पूरक शैली में किया गया है। चित्र में दो पशु भी रूपांकित हैं। मानवाकृतियों का मुख खुला हुआ रेखाँकित किया गया है, जिससे प्रतीत होता है कि वे गायन भी कर रही हैं। इन मानव रूपों का सिर व शरीर–भाग पूरक शैली में बनाया गया है, जबकि हाथ, पैर इत्यादि अवयव रेखीय विधि से अंकित हैं। मानव के प्रजनन अंग का स्पष्ट

व अतिरंजित स्वरूप में भी अंकन किया गया है। तत्कालीन संस्कृति में संभवतः नग्न रूप में नृत्योत्सव मनाने का कोई विधान रहा होगा। पुरा चित्रकार द्वारा इस दृश्य में उस आयोजन का ही रूपांकन किया गया है। पुरा मानव के हर्षोल्लास व उत्साह की अभिव्यंजना करता यह चित्र उनकी सांस्कृतिक गतिविधियों में रूचि पूर्वक संलग्नता को दर्शा रहा है। चित्र में रूप–संयोजन, आकर्षक व भावानुकूल है। चित्रण में गति के साथ लयात्मकता भी दर्शित हो रही है। मुद्राओं व भाव भंगिमाओं को अत्यंत कौशल के साथ चित्रांकित किया गया है। विद्वानों द्वारा यह रचना ताम्राश्मकालीन मानी गई है।

चित्र क्रमांक–10 स्त्री मानवाकृति का चित्रण है। स्त्री खाद्य पदार्थ को कूटते हुए दृष्टव्य हो रही है। सम्पूर्ण आकृति रेखीय विधि से निर्मित है परन्तु स्तन पूरक शैली में बनाये गये हैं। अल्प रेखाओं से सम्पूर्ण आकृति मुद्रा व भाव की प्रतीति करा देना पुरा चित्रकार की विशेषता है, जो इस आरेखन में भी परिलक्षित हो रही है। स्त्री के द्वितीय चित्र (चित्र क्रमांक–11) में स्तनपान दृश्य को रूपायित किया गया है। इस चित्र में भी स्त्री के स्तन व बैठने का स्थान पूरक शैली से बनाया गया है, जबकि शेष भाग व बच्चे को रेखीय विधि से अंकित किया गया है। स्त्री के कण्ठ का रेखांकन नहीं किये जाने के पश्चात् भी आकृति में पूर्णता का बोध हो रहा है। इन अनुपम रूपांकन को देखकर प्रतीत होता है मानो आधुनिक कलाकार द्वारा निर्मित रेखाकृतियाँ हैं। ये दोनों चित्र लाल रंग से रेखायित हैं एवं विद्वानों ने इन्हें मध्याश्मकालीन माना है।

उपरोक्त वर्णित विविध विषयों के अतिरिक्त यहाँ घोड़ागाड़ी (रथ) इत्यादि का चित्रांकन भी प्राप्त हुआ है।

## निष्कर्ष –

कठोतिया के शैलाश्रयों में पुरा मानव द्वारा उकेरे गये मनमोहक चित्रों में विषय वस्तु की विविधता तो प्राप्त होती ही है, ये दृश्याँकन कलात्मक परिप्रेक्ष्य में भी अत्यंत आकर्षक, मौलिक एवं भव्य हैं। इन कृतियों में उत्कृष्ट रूप रचना, उत्तम संयोजन एवं सुंदर आलंकारिकता दृष्टव्य होती है। भावाभिव्यंजना इन रचनाओं का मुख्य तत्व है। पुरा कलाकार द्वारा कुशल चित्राँकन से हर्ष, उत्साह, वात्सल्य एवं शौर्य इत्यादि विभिन्न भावों की अनुभूति करा दी गई है। विभिन्न चित्रों के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि पुरा कलाकार द्वारा जितनी निपुणता से ये रेखांकन किये गये हैं वो निरंतर अभ्यास से ही संभव है। कदाचित् ये चित्र रचयिता सतत् रचनाशील रहे हैं इसीलिये ये विलक्षण आरेखन रूप ले सके हैं। विभिन्न भावों के साथ ही चित्रों में गति, लय, संतुलन एवं कल्पना तत्व का भी अनुपम समावेश दृष्टव्य होता है। आदि मानव की चिन्तनपरक् एवं असाधारण रचनात्मकता के द्योतक ये शैलचित्र कलात्मकता की दृष्टि से विशिष्ट व कला के क्षेत्र में अद्वितीय माने जा सकते हैं।

## आभार :

मैं शंकर तिवारी, जगदीष गुप्त, आर. आर. सिंह, एस.के. पांडे, नारायण व्यास, एरविन न्यूमेयर, के.के. चक्रवर्ती, बेडनारिक, के.के. मुहम्मद, एस.एस. गुप्त व जे. मैनुअल का हार्दिक आभार व्यक्त करती हूँ। आपके द्वारा शैलचित्रों से संबधित खोज, शोध, मानचित्र व चित्रों की प्रकाषित अनुकृतियों का इस शोध पत्र में उपयोग किया गया है।

– सहायक प्राध्यापक (चित्रकला),
शास. म. ल. बा. स्ना. कन्या महाविद्यालय, भोपाल
– एफ 90/22, तुलसी नगर, भोपाल

ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
IF: 4.321 (CosmosImpactFactor), 2.532 (I2OR)
InfoBase Index IBI Factor 3.86

**संदर्भ :**

1. पाण्डेय एस. के., 1993, इण्डियन रॉक आर्ट, आर्यन बुक्स इंटरनेशनल, नई दिल्ली, पृष्ठ –1–2
2. मुहम्मद, के. के., गुप्त, एस. एस. व मनुअल जे., 2008 अ ब्रीफ सर्वे ऑफ द रॉक पोंटिंग्स ऑफ कठोतिया, डिस्ट्रिक सीहोर, एम. पी., चक्रवर्ती के.के. व बादाम जी.एल. (एडीटर) रॉक ऑर्ट एण्ड ऑर्कयोलॉजी ऑफ इंडिया, आगम कला प्रकाशन, दिल्ली में प्रकाशित, पृष्ठ – 45 –52
3. तिवारी, एस, 1976, पेंटेड रॉक शेल्टर्स ऑफ एस बेल्ट एण्ड द चाल्कोलिथिक कल्चर्स ऑफ बेतवा सोर्स रीजन, प्राच्य प्रतिभा, वाल्यूम– प्ट नं0 2 भोपाल, पृष्ठ – 62 –80
4. सिंह, आर. आर., 2008, इन द लविंग मैमोरी ऑफ प्रो. शंकर तिवारी, चक्रवर्ती के. के., बादाम जी. एल. (एडीटर) रॉक आर्ट एण्ड ऑर्कयोलॉजी ऑफ इंडिया में प्रकाशित, पृष्ठ – 41 –42
5. गुप्त जगदीश, 1967, प्रागैतिहासिक भारतीय चित्रकला नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, पृष्ठ – 101–102
6. न्यूमॉयर एरविन,1993, लाइन्स ऑन स्टोन द प्रिहिस्टॉरिक आर्ट ऑफ इण्डिया, मनोहर, दिल्ली, पृष्ठ– 293, 295
7. तिवारी शंकर, 1984, टवेंटी फाइव ईयर्स ऑफ रॉक पेंटिंग एक्स्प्लोरेशन इन द बेतवा सोर्स रीजन – अ री अप्रेजल, चक्रवर्ती, के.के. (एडीटर) रॉक आर्ट ऑफ इंडिया, अर्नाल्ड हायनमैन, न्यू डेल्ही में प्रकाशित पृष्ठ – 228–238
8. मानचित्र आभार – शंकर तिवारी
9. चित्र आभार– पुष्पा तिवारी एवं ओम प्रकाष मिश्रा (रॉक आर्ट ऑफ द एस बेल्ट इन सेन्ट्रल इन्डिया) , नारायण व्यास, एरविन न्यूमॉयर (लाइन्स ऑन स्टोन), के. के. चक्रवर्ती एवं बेडनारिक (रॉक आर्ट एंड इट्स ग्लोबल कान्टैक्स्ट)

*Corresponding author.
*E-mail address:* Anjali.mis27@gmail.com

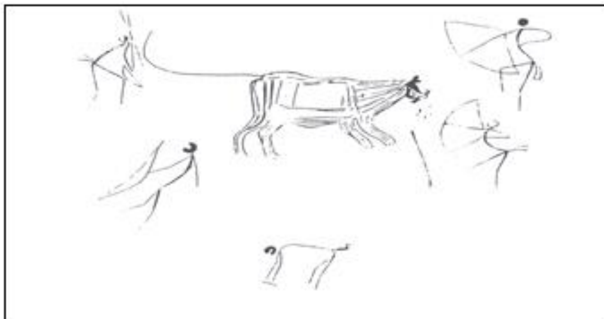

चित्र कमांक – 1 (अ) आखेट दृश्य

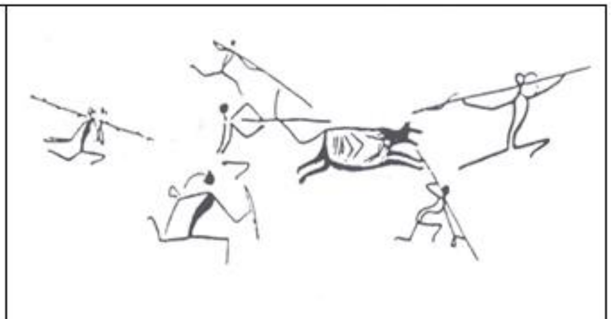

चित्र कमांक – 1 (ब) आखेट दृश्य

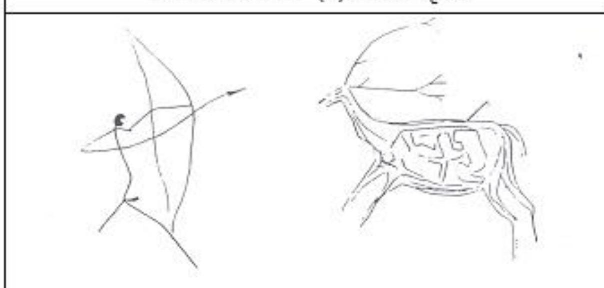

चित्र कमांक – 1 (स) आखेट दृश्य

चित्र कमांक – 2 (अ) अष्वारोहियों का चित्रण

ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
IF: 4.321 (CosmosImpactFactor), 2.532 (I2OR)
InfoBase Index IBI Factor 3.86

चित्र कमांक – 2 (ब) पशु समूह का मनोहारी चित्रांकन

चित्र कमांक – 2 (स) विचित्र पशु का अंकन

चित्र कमांक – 2 (द) सगर्भ पशु का चित्रण

चित्र कमांक – 3 सारस पक्षी का अपने बच्चों के साथ रेखांकन

चित्र कमांक – 4 सर्प का विलक्षण चित्रांकन

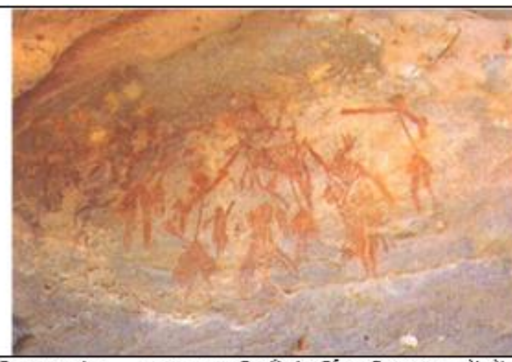

चित्र कमांक – 5 मानवाकृतियाँ (धार्मिक कियाकलापों में रत)

चित्र कमांक – 6 मानवाकृतियाँ (भार ढोते हुए)

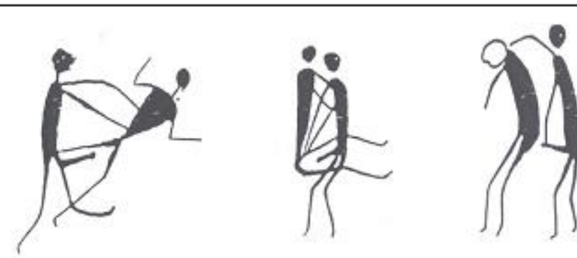

चित्र कमांक – 7 मानवाकृतियाँ (मैथुन दृश्य)

ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
IF: 4.321 (CosmosImpactFactor), 2.532 (I2OR)
InfoBase Index IBI Factor 3.86

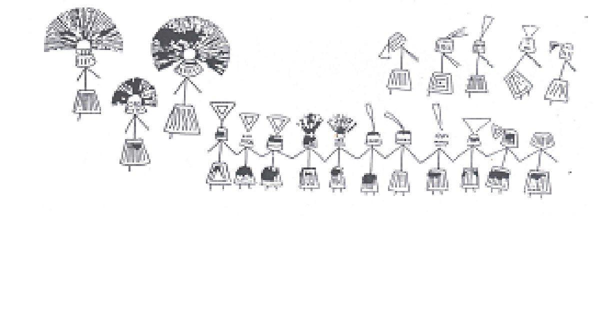

चित्र कमांक – 8 मानवाकृतियाँ (नृत्य रत् समूह)

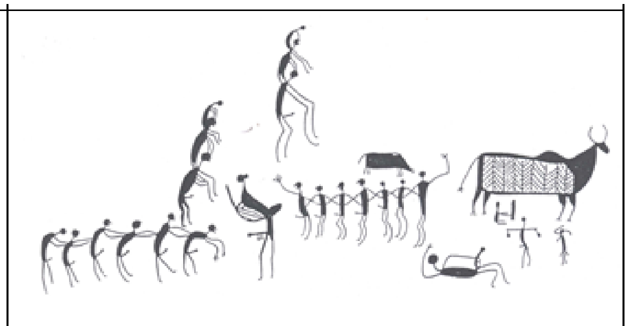

चित्र कमांक – 9 मानवाकृतियाँ (नृत्य–गान करते हुए)

चित्र कमांक – 10 स्त्री मानवाकृति (खाद्य पदार्थ को कूटते हुए)

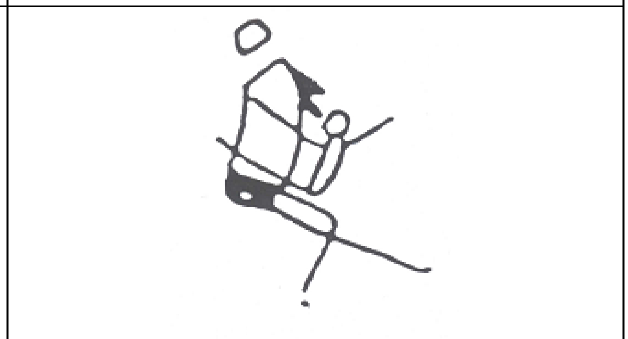

चित्र कमांक – 11 स्त्री मानवाकृति (स्तनपान दृश्य)

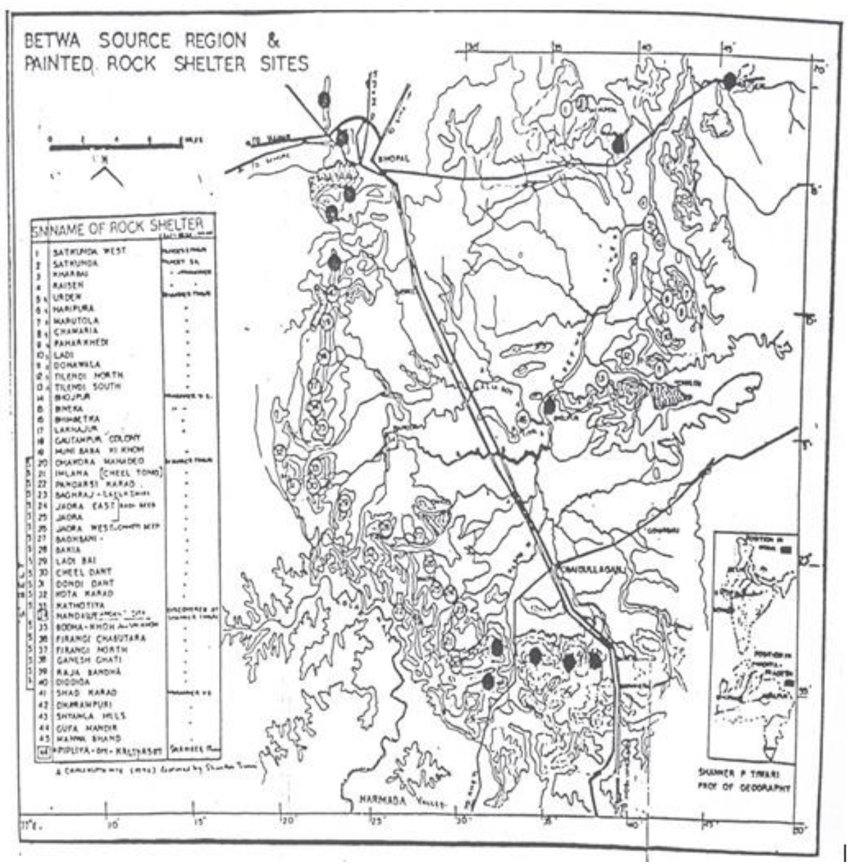


साभार–शंकर तिवारी